ISSN-2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/344

"दर्द की दास्तान : दर्दजा"

रोहिणी रामचंद्र साळ
पीएच.डी. शोध – छात्र
हिंदी – विभाग
सावित्रीबाई फुले, विश्वविद्यालय, पुणे

इक्कीसवीं सदी की युवा साहित्यकार जयश्री रॉय एक संवेदनशील लेखिका के रुप मे पाठकों के मन पर अपने लेखन साहित्य से अलग छाप छोडती है। जयश्री रॉय अपने कथा साहित्य तथा उपन्यासों मे समाज में घटित घटनाओं का बड़ी सूक्ष्मता से अंकन करती है। उनका 'दर्दजा' नामक उपन्यास स्त्रियों की सुन्नत प्रथा को लेकर एक बेहद गंभीर मसले से पाठकों का परिचय करवाता हैं। 'दर्दजा' दर्द की एक महान गाथा बन गया है।

जयश्री रॉय 'दर्दजा' उपन्यास के माध्यम से सुन्नत की कुप्रथा को अत्यंत संवेदनशीलता के साथ उजागर करती है यह प्रथा अफ्रीका के 28 देशों के साथ–साथ मध्य पूर्व के कुछ देश और अमेरिका के कुछ जातीय समुदायों में है। धर्म के नाम पर पुरुषों का खतना तो किया जाता है परंतु उसी धर्म के नाम पर स्त्रियों की सुन्नत भी कि जाती है। सुन्नत करने का मतलब स्त्री के यौनांग के बाहरी हिस्से को काट कर सिल दिया जाता, ताकी उसकी नैसर्गिक कामेच्छा को नियंत्रित किया जा सके। इस कुप्रथा के कारण स्त्रियों को मात्र एक मशीन में बदला जाता है, जो बच्चे पैदा कर सके। प्रस्तुत उपन्यास में जयश्री रॉय ने सुन्नत के दर्द को इस प्रकार उजागर किया है, कि उसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जाता। उपन्यास के माध्यम से पाठक स्त्री के उस दर्द से जुड जाता है।

उपन्यास की प्रमुख स्त्री पात्र माहरा सदियों से स्त्री होने के दर्द को झेलती तथा देखती आयी है, जंगल में घास–फूस की झोंपडी बनाकर किसी बंजारन के हाथों सुन्नत की जाती है। जिसके इथियार पत्थर के नुकीले टुकडे, भोंथरा चाकू, हैंडल टूटी कैंची, ब्लेड का टुकडा आदि होते है। माहरा की भी सुन्नत करायी जाती है। दर्द का वैसा भीषण अनुभव माहरा जीवन में पहली बार लेती है। माहरा का दर्द जयश्री इसप्रकार व्यक्त करती है– "ढेर सारी जंगली, विशैली, चीटीयाँ मेरे अंदर घुरा गयी है और मुझे खोद–खोद कर खा रही है। या फिर कोई बिच्छू लगातार डंक मार रहा है। तेज जलन हो रही है..... पूरा शरीर पसीने से भीग गया है..."[1]

सुन्नत के कारण माहरा की पूरी दुनिया बदल जाती है। दर्द, उदासी और और अकेलेपन के साथ वह देह और मन से भी अपाहिज बन जाती है। माहरा अपनी बहन मासा को इस नरक यातना से बचाना चाहती है। परंतु पाँच साल की उम्र मे मासा की भी सुन्नत करायी जाती है। सुन्नत के भीषण दर्द के साथ शरीर से पेशाब रिझता रहने से शरीर से बदबू आती है ऐसी स्त्रियों को समाज स्वीकारता भी नहीं और आखिरकार जंगलों में झोपड़ी बनाकर उन्हे पूरी जिंदगी बितानी पड़ती है। एक गोरी मेम के यहाँ काम करने के बहाने जाकर माहरा और मासा पढ़ाई करती थी। परंतु मासा सुन्नत के इन्फेक्शन से गर जाती है। मासा जैसी अनेक बच्चियाँ सुन्नत के दर्द से हलाल होते जानवरों की तरह तड़प–तड़प कर अपनी जान देती है। कई बार इन बच्चियों को इन्फेक्शन से एच.आय.व्ही, खून मे जहर आदि के कारण जीवन से हाथ धोना पड़ता है। माहरा अपनी बहन गासा की मौत को आसानी से स्वीकार नही कर पाती। माहरा की शादी जहीर नामक 60 साल के बूढे से की जाती है। जिसकी पहले तीन शादियाँ होकर सात बच्चे थे। शादी की पहली रात बहुत कोशिश के बाद जहीर माहरा के अंदर प्रवेश नहीं कर पाता तब माहरा की माँ जंग खाये भोंथरे चाकू से माहरा के बंद पडे जननांग को खोलने का प्रयास करती है। इस तरह के दर्द को सहते हुए माहरा एक दिन गर्भवती रहती है। और अपनी बेटी को अपनी बहन का ही नाम देती है– मासा। गाहरा की पूरी दुनिया अपनी बेटी मासा थी। माहरा अपनी बेटी को सुन्नत के भीषण दर्द से बचाने की लाख कोशिशें करती है। परंतु माहरा की नजर बचाकर मासा को सुन्नत के लिए जंगल ले जाते है। माहरा अपनी बेटी को ढूँढ निकालती है। और अपनी बेटी के लिए परिवार, धर्म, समाज के विरुध्द संघर्ष करती है। यहाँ अपनी बेटी मासा के लिए माहरा का संघर्ष पाठकों के गन में संवेदना के साथ ऊर्जा का निर्माण करता है।

Scanned with CamScanner

मासा को बचाने के लिए माहरा हाथ में तरांती लेकर सब पर वार करते हुए बेटी पर उठी हर एक गलत नजर को खत्म करती रहती है। माहरा का यह संघर्ष सुन्न करनेवाला है। माहरा को लेकर मासा रेत से भागती रहती है। जयश्री रॉय माहरा को सिर्फ उस जमीन से भागते हुए चित्रित नहीं करती, तो माहरा सदियों से चली आ रही कुरीतियों, जुल्म तथा तकलीफ से भागती दिखाई देती है। वह अपनी बेटी को ऐसी जगह भेजना चाहती है, जहाँ औरत होना गुनाह नहीं होता। भागते–भागते माहरा गिर पड़ती है और अपनी बेटी को बेरहमी से धकेलकर वहाँ से भागने को कहती है। वह माहरा को उस बदनरीव धरती से खुशियों की सूरजमूखी दुनिया मे भेजना चाहती है और इन दो विभिन्न दुनिया के बीच अपनी मासा के लिए अंतिग साँसे लेती हैं। माहरा अपने अंतिम पलों मे सोचती है, "मैंने जी लिया अपना दोजख, सारी सजाएँ काट ली। मगर बस यही तक! मुझ तक! अब इससे आगे मुझसे गुजर कर ये जहन्नुम मेरी बेटी तक नही पहुँच सकेगा! कैसे भी नही! कभी भी नही![2]

प्रस्तुत उपन्यास में माहरा एक स्त्री होने के साथ–साथ एक माँ के रुप में चित्रित हैं जो सुन्नत के भीषण दर्द को खुद तो सहती है। परंतु उस दर्द से अपनी बेटी को बचाने के लिए अपनी जान तक देती है। माहरा के माध्यम से जयश्री रॉय सुन्नत के दर्द की भीषण गाथा को अत्यंत संवेदना के साथ अभिव्यक्त करती है। साथ ही इस क्रुप्रथा का विस्तार बताती है– "आफ्रिका के 28 देशों में यह रिवाज है। इनमें से 14 देशों ने इस रिवाज पर कानूनी तौर पर रोक लगाई हैं। मगर आज भी इस क्रुप्रथा का शिकार 140 मिलियन औरतें हो चुकी है। दस साल की उम्र की लगभग 101 मिलियन बच्चियाँ किसी न किसी तरह के औरतों की सुन्नत या एफजीएम से गुजर चुकी है..."[3]

'दर्दजा' उपन्यास दुःख और उससे मुक्त होने की चाहत मे लडती स्त्री की संघर्ष गाथा है। माहरा का यह संघर्ष पितृसत्ता व्दारा थोपी गई गलत धारणाओं के विरुद्ध है। इस उपन्यास में जयश्री रॉय वैश्विक कुप्रथा को संवेदना के साथ उजागर करते हुए माहरा को एक सहनशील स्त्री के साथ–साथ संघर्षशील माँ के रुप मे सजीवता के साथ चित्रित करने मे सफल बनी है।

संदर्भ :–

1. दर्दजा, जयश्री रॉय पृ.16
2. वही, पृ. 192
3. वही, पृ.168

Scanned with CamScanner